==

AVYAKT MURLI

11 / 01 / 83

==

11-01-83 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

समर्थ की निशानी – संकल्प, बोल, कर्म, स्वभाव, स्ंस्कार बाप समान

लंदन ग्रुप के प्रति बापदादा बोले –

आज रूहानी बाप बच्चों से दिलाराम को दी हुई दिल का समाचार पूछने आये हैं। सभी ने दिलाराम को दिल दी है ना। जब एक दिलाराम को दिल दे दी तो उसके सिवाए और कोई आ नहीं सकता। दिलाराम को दिल देना अर्थात् दिल में बसाना। इसी को ही सहज योग कहा जाता हे। जहाँ दिल होगी वहाँ ही दिमार्ग भी चलेगा। तो दिल में भी दिलाराम और दिमाग में भी अर्थात् स्मृति में भी दिलाराम। और कोई भी स्मृति वा व्यक्ति दिलाराम के बीच आ नहीं सकता - ऐसा अनुभव करते हो? जब दिल और दिमाग अर्थात् स्मृति, संकल्प, शक्ति सब बाप को दे दी, तो बाकी रहा ही क्या। मन, वाणी और कर्म से बाप को दे दी, तो बाकी रहा ही क्या। मन, वाणी और कर्म से बाप के हो गये। संकल्प भी यह किया कि हम बाप के हैं और वाणी से भी यही कहते हो 'मेरा बाबा', मैं बाबा का। और कर्म में भी जो सेवा करते हो वह भी बाप की सेवा वह मेरी सेवा - ऐसे ही मन, वाणी और कर्म से बाप के बन गये ना। बाकी मार्जिन क्या रही, जहाँ से

कोई संकल्प मात्र भी आवे। कोई भी संकल्प वा किसी प्रकार की भी आकर्षण आने का कोई दरवाजा वा खिड़की रह गई है क्या? आने का रास्ता हैं ही मन, बुद्धि, वाणी और कर्म - चारों तरफ चेक करो कि जरा भी किसको आने की मार्जिन तो नहीं है। मार्जिन है? ड्रीम्स (स्वप्न) भी इसी ही आधार पर आते हैं। जब बाप को एक बार कहा कि यह सब कुछ तेरा फिर बाकी क्या रहा? इसी को ही निरंतर याद कहा जाता है। कहने और करने में अन्तर तो नहीं कर देते हो? तेरा में मेरा मिक्स तो नहीं कर देते हो? सूर्यवंशी अर्थात् गोल्डन एज। उसमें मिक्स तो नहीं होगा ना। डाइमन्ड भी बेदाग हो। कोई दाग तो नहीं गया है।

जिस समय भी कोई कमज़ोरी वर्णन करते हो, चाहे संकल्प की, बोल की, चाहे संस्कार स्वभाव की, तो शब्द क्या कहते हो? मेरा विचार ऐसा कहता है। वा मेरा संस्कार ही ऐसा है। लेकिन जो बाप का संस्कार, संकल्प सो मेरा संस्कार, संकल्प। जब बाप जैसा संकल्प, संस्कार हो जाता है तो ऐसे बोल कब नहीं बोलेंगे कि क्या करूँ, मेरा स्वभाव संस्कार ऐसा हे। कया करूँ, यह शब्द ही कमज़ोरी का है। समर्थ की निशानी है - सदा बाप समान संकल्प, बोल, कर्म, स्वभाव, संस्कार हो। बाप के अलग, मेरे अलग यह हो नहीं सकता। उनके संकल्प में, बोल में, हर बात में बाबा, बाबा शब्द नैचुरल होगा। और कर्म करते करावनहार करा रहा है - यह अनुभव होगा। जब सब में बाबा आ गया तो बाप के आगे माया आ नहीं सकती। या बाप होगा या माया। लण्डन निवासी बाबा, बाबा कहते, स्मृति में रखते सदाकाल

के लिए मायाजीत हो गये हैं। जब वर्सा सदाकाल का लेते हो तो याद भी सदाकाल की चाहिए ना। मायाजीत भी सदाकाल के लिए चाहिए।

लण्डन है सेवा का फाउन्डेशन स्थान। तो फाउण्डेशन के स्थान पर रहने वाले भी फाउन्डेशन के समान सदा मजबूत हैं। क्या करें, कैसे करें, ऐसी कोई भी कम्पलेन्ट तो नहीं है ना। बहुत करके ड्रामा भी माया के ही करते हो ना। हर ड्रामा में माया न आने वाली भी जाती है। माया के बिना शायद ड्रामा नहीं बना सकते हो। माया के भी भिन्न-भिन्न स्वरूप दिखाते हो ना। हर बात का परिवर्तक स्वरूप हो, इसका ड्रामा दिखाओ। माया का मुख्य स्वरूप क्या है, उसको तो अच्छी तरह से जानते हो। लेकिन मायाजीत बनने के बाद वही माया के स्वरूप कैसे बदल जाते हैं, वह ड्रामा दिखाओ। जैसे शारीरिक दृष्टि जिसको काम कहते, तो उसके बजाए आत्मिक स्नेह रूप में बदल जाता - ऐसे सब विकार परिवर्तक रूप में हो जाते। तो क्या परिवर्तन हुआ यह प्रैक्टिकल में अनुभव भी करो और दिखाओ भी।

लण्डन निवासियों ने विशेष स्व की उन्नति प्रति और विश्व कल्याण प्रति कौन सा लक्ष्य रखा है? सभी को विशेष सदा यही स्मृति में रहे कि हम हैं ही फरिश्ते। फिरश्ते का स्वरूप कया, बोल क्या, कर्म क्या होता वह स्वत: ही फरिश्ते रूप से चलते चलेंगे। "फरिश्ता हूँ, फरिश्ता हूँ" - इसी स्मृति को सदा रखो। जबकि बाप के बन गये और सब कुछ मेरा सो तेरा कर दिया तो क्या बन गये। हल्के फरिश्ते हो गये ना। तो इस लक्ष्य को सदा

सम्पन्न करने के लिए एक ही शब्द कि सब बाप का है, मेरा कुछ नहीं - यह स्मृति में रहे। जहाँ मेरा आवे तो वहाँ तेरा कह दो। फिर कोई बोझ नहीं फील होगा। हर वर्ष कदम आगे बढ़ रहा है और सदा आगे बढ़ते रहेंगे, उड़ती कला में जाने वाले फरिश्ते हैं यह तो पक्का है ना। नीचे ऊपर, नीचे ऊपर होने वाले नहीं। अच्छा - लण्डन निवासियों की महिमा तो सभी जानते हैं। आपको सब किस नजर से देखते हैं? सदा मायाजीत। क्योंकि पावरफुल डबल पालना मिल रही है। बापदादा की तो सदा पालना है ही लेकिन बाप ने जिन्हों को निमित्त बनाया है वह भी पावरफुल पालना मिल रही है। निराकार, आकार और साकार तीनों को फालो करो तो क्या बन जायेंगे? फरिश्ता बन जायेंगे ना। लण्डन निवासी अर्थात् नो कम्पलेन्ट, नो कन्फ्यूज। अलौकिक जीवन वाले, स्वराज्य करनेवाले सब किंग और क्वीन हो ना। आपका नशा है ना।''

कुमारियों से - कुमारियाँ तो अपना भाग्य देख सदा हर्षित होती हैं। कुमारी लौकिक जीवन में भी ऊंची गई जाती है और ज्ञान में तो कुमारी है ही महान। लौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें और पारलौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें। ऐसे अपने को महान समझती हो? आप तो 'हाँ' ऐसे कहो जो दुनिया सुने। कुमारियों को तो बापदादा अपने दिल की तिजोरी में रखता है कि किसी की भी नजर न लगे। ऐसे अमूल्य रतन हो। कुमारियाँ सदा पढ़ाई और सेवा इसी में ही बिजी रहती हैं। कुमारी जीवन में बाप मिल गया और चाहिए ही क्या। अनेक सम्बन्धों में भटकना नहीं पड़ा, बच गई।

एक में सर्व सम्बन्ध मिल गये। नहीं तो पता है कितने व्यर्थ के सम्बन्ध हो जाते, सासू का, नंनद का, भाभियों कासबसे बच गई ना। न जाल में फँसी, न जाल से छुड़ाने का समय ही था। कुमारियाँ तो हैं ही डबल लाइट। कुमारियाँ सदा बाप समान सेवाधारी और बाप समान सर्व धारणाओं स्वरूप। कुमारी जीवन अर्थात् प्युअर जीवन। प्युअर आत्मायें श्रेष्ठ आत्मायें हुई ना। तो बापदादा कुमारियों को महान पूज्य आत्मा के रूप में देखते हैं। पवित्र आत्मायें सर्व की और बाप की प्रिय हैं।

अपने भाग्य को सदा सामने रखते हुए समर्थ आत्मा बन सेवा में समर्थी लाते रहो। यही बड़ा पुण्य है। जो स्वयं को प्राप्ति हुई है वह औरों को भी कराओ। खज़ानों को बाँटने से खज़ाना और ही बढ़ेगा - ऐसे शुभ संकल्प रखने वाली कुमारी हो ना। अच्छा –

टीचर्स के साथ :- विश्व के शोकेस में विशेष शोपीस हो ना। सबकी नजर निमित्त बने हुए सेवाधारी कहो, शिक्षक कहो, उन्हीं पर ही रहती है। सदा स्टेज पर हो। कितनी बड़ी स्टेज है। और कितने देखने वाले हैं। सभी आप निमित्त आत्माओं से प्राप्ति की भावना रखते हैं। सदा यह स्मृति में रहता है? सेन्टर पर रहती हो वा स्टेज पर रहती हो? सदा बेहद की अनेक आत्माओं के बीच बड़े ते बड़ी स्टेज पर हो। इसलिए सदा दाता के बच्चे देते रहो और सर्व की भावनायें सर्व की आशायें पूण करते रहो। महादानी और वरदानी बनो, यही आपका स्वरूप है। इस स्मृति से हर संकल्प, बोल और कर्म हीरो पार्ट के समान हो क्योंकि विश्व की आत्मायें देख रही हैं।

सदा स्टेज पर ही रहना, नीचे नहीं आना। निमित्त सेवाधारियों को बापदादा अपना फ्रेंडस समझते हैं। क्योंकि बाप भी शिक्षक है तो बाप समान निमित्त बनने वाले फ्रेंडस हुए ना। तो इतनी समीप की आत्मायें हो। ऐसे सदा अपने को बाप के साथ वा समीप अनुभव करती हो? जब भी बाबा कहो तो हजार भुजाओं के साथ बाबा आपके साथ है। ऐसे अनुभव होता है? जो निमित्त बने हुए हैं उन्हीं को बापदादा एकस्ट्रा सहयोग देते हैं। इसीलिए बड़े फखुर से बाबा कहो, बुलाओ, तो हाजिर हो जायेंगे। बापदादा तो ओबीडियन्ट हैं ना।

अच्छा - ओम् शान्ति।

==

QUIZ QUESTIONS

==

प्रश्न 1 :- फरिशता बनने के लक्ष्य के लिए क्या करना है? किन तीन बातों को याद रखें तो फरिश्ता बन जाएँगे? बापदादा ने लण्डन निवासी का अर्थ क्या बताया है?

प्रश्न 2 :- कुमारी जीवन की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

प्रश्न 3 :- किसको निरंतर याद कहा जाता है?

प्रश्न 4 :- आपका स्वरूप क्या है? जब भी बाबा कहो तो एकदम क्या हो जाएगा?

प्रश्न 5 :- जब बाप समान संकल्प, संस्कार हो जायेंगे तो क्या होगा? समर्थ की निशानी क्या है?

FILL IN THE BLANKS:-

(खज़ानों, ड्रामा, समर्थी, बढ़ेगा, आत्मिक, भाग्य, प्रैक्टिकल, परिवर्तक, माया, स्वरूप)

1 अपने ______ को सदा सामने रखते हुए समर्थ आत्मा बन सेवा में ______ लाते रहो। यही बड़ा पुण्य है।

2 माया का मुख्य स्वरूप क्या है, उसको तो अच्छी तरह से जानते हो। लेकिन मायाजीत बनने के बाद वही ______ के स्वरूप कैसे बदल जाते हैं, वह ______ दिखाओ।

3 माया के भी भिन्न-भिन्न ______ दिखाते हो ना। हर बात का ______ हो, इसका ड्रामा दिखाओ।

4 जो स्वयं को प्राप्ति हुई है, वह औरों को भी कराओ। ______ को बाँटने से खज़ाना और ही ______ ।

5 जैसे शारीरिक दृष्टि जिसको काम कहते, तो उसके बजाए ______ स्नेह रूप में बदल जाता - ऐसे सब विकार परिवर्तक रूप में हो जाते। तो क्या परिवर्तन हुआ यह ______ में अनुभव भी करो और दिखाओ भी।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:- 【✔】【✖】

1 :- जब एक दिलाराम को दिल दे दी तो उसके सिवाए और कोई आ नहीं सकता।

2 :- दिलाराम को दिल देना अर्थात् दिमाग में बसाना। इसी को ही सहज योग कहा जाता है।

3 :- लण्डन निवासी बाबा, बाबा कहते, स्मृति में रखते सदाकाल के लिए मायाजीत हो गये हैं। जब वर्सा सदाकाल का लेते हो तो माया भी सदाकाल की चाहिए ना।

4 :- लण्डन है सेवा का फाउन्डेशन स्थान। तो फाउण्डेशन के स्थान पर रहने वाले भी फाउन्डेशन के समान सदा मजबूत हैं। क्या करें, कैसे करें, ऐसी कोई भी कम्पलेन्ट तो नहीं।

5 :- जब सब में बाबा आ गया तो बाप के आगे माया आ नहीं सकती। या बाप होगा या माया।

==

QUIZ ANSWERS

==

प्रश्न 1 :- फरिशता बनने के लक्ष्य के लिए क्या करना है? किन तीन बातों को याद रखें तो फरिश्ता बन जाएँगे? बापदादा ने लण्डन निवासी का अर्थ क्या बताया है?

उत्तर 1 :- बापदादा बता रहे हैं-

❶ सभी को विशेष सदा यही स्मृति में रहे कि हम हैं ही फरिश्ते। फरिश्ते का स्वरूप क्या, बोल क्या, कर्म क्या होता वह स्वत: ही फरिश्ते रूप से चलते चलेंगे। "फरिश्ता हूँ, फरिश्ता हूँ" - इसी स्मृति को सदा रखो।

❷ जबकि बाप के बन गये और सब कुछ मेरा सो तेरा कर दिया तो क्या बन गये। हल्के फरिश्ते हो गये ना। तो इस लक्ष्य को सदा सम्पन्न करने के लिए एक ही शब्द कि सब बाप का है, मेरा कुछ नहीं - यह स्मृति में रहे। जहाँ मेरा आवे तो वहाँ तेरा कह दो। फिर कोई बोझ नहीं फील होगा।

❸ हर वर्ष कदम आगे बढ़ रहा है और सदा आगे बढ़ते रहेंगे, उड़ती कला में जाने वाले फरिश्ते हैं यह तो पक्का है ना। नीचे ऊपर, नीचे ऊपर होने वाले नहीं।

❹ आप सबको बापदादा सदा मायाजीत की नज़र से देखते है क्योंकि पॉवरफुल डबल पालना मिल रही है। बापदादा की तो सदा पालना है ही लेकिन बाप ने जिन्हों को निमित्त बनाया है वह भी पॉवरफुल पालना मिल रही है। निराकार, आकार और साकार तीनों को फॉलो करो तो फरिश्ता बन जायेंगे।

❺ लण्डन निवासी अर्थात् नो कम्पलेन्ट, नो कन्फ्यूज। अलौकिक जीवन वाले, स्वराज्य करने वाले सब किंग और क्वीन हो।

प्रश्न 2 :- कुमारी जीवन की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर 2 :- बापदादा बता रहे हैं-

❶ कुमारियाँ तो अपना भाग्य देख सदा हर्षित होती हैं। कुमारी लौकिक जीवन में भी ऊँची गायी जाती है और ज्ञान में तो कुमारी है ही महान। लौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें और पारलौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें।

❷ आप तो 'हाँ' ऐसे कहो जो दुनिया सुने। कुमारियों को तो बापदादा अपने दिल की तिजोरी में रखता है कि किसी की भी नजर न लगे। ऐसे अमूल्य रतन हो।

❸ कुमारियाँ सदा पढ़ाई और सेवा इसी में ही बिजी रहती हैं। कुमारी जीवन में बाप मिल गया और चाहिए ही क्या। अनेक सम्बन्धों में भटकना नहीं पड़ा, बच गई। एक में सर्व सम्बन्ध मिल गये।

❹ नहीं तो पता है कितने व्यर्थ के सम्बन्ध हो जाते, सासू का, ननद का, भाभियों कासबसे बच गई ना। न जाल में फँसी, न जाल से छुड़ाने का समय ही था। कुमारियाँ तो हैं ही डबल लाइट। कुमारियाँ सदा बाप समान सेवाधारी और बाप समान सर्व धारणाओं स्वरूप।

❺ कुमारी जीवन अर्थात् प्युअर जीवन। प्युअर आत्मायें श्रेष्ठ आत्मायें हुई ना। तो बापदादा कुमारियों को महान पूज्य आत्मा के रूप में देखते हैं। पवित्र आत्मायें सर्व की और बाप की प्रिय हैं।

प्रश्न 3 :- किसको निरंतर याद कहा जाता है?

उत्तर 3 :- बापदादा बता रहे हैं-

❶ जहाँ दिल होगी वहाँ ही दिमाग भी चलेगा। तो दिल में भी दिलाराम और दिमाग में भी अर्थात् स्मृति में भी दिलाराम।

❷ और कोई भी स्मृति वा व्यक्ति दिलाराम के बीच आ नहीं सकता। जब दिल और दिमाग अर्थात् स्मृति, संकल्प, शक्ति सब बाप को दे दी, तो बाकी रहा ही क्या। मन,वाणी और कर्म से बाप को दे दी, तो बाकी रहा ही क्या। मन, वाणी और कर्म से बाप के हो गये।

❸ संकल्प भी यह किया कि हम बाप के हैं और वाणी से भी यही कहते हो 'मेरा बाबा', मैं बाबा का। और कर्म में भी जो सेवा करते हो वह भी बाप की सेवा, वह मेरी सेवा - ऐसे ही मन, वाणी और कर्म से बाप के बन गये ना।

❹ कोई भी संकल्प व किसी प्रकार की भी आकर्षण आने का दरवाजा वा खिड़की का रास्ता हैं ही मन, बुद्धि, वाणी और कर्म। चारों तरफ

चेक करो कि जरा भी किसको आने की मार्जिन तो नहीं है। ड्रीम्स (स्वप्न) भी इसी ही आधार पर आते हैं।

❺ जब बाप को एक बार कहा कि यह सब कुछ तेरा फिर बाकी क्या रहा? इसी को ही निरंतर याद कहा जाता है। सूर्यवंशी अर्थात् गोल्डन एज। उसमें मिक्स तो नहीं होगा ना। डाइमन्ड भी बेदाग हो। कोई दाग तो नहीं गया है।

प्रश्न 4 :- आपका स्वरूप क्या है? जब भी बाबा कहो तो एकदम क्या हो जाएगा?

उत्तर 4 :- बापदादा समझानी दे रहे हैं-

❶ विश्व के शोकेस में विशेष शोपीस हो। सबकी नजर निमित्त बने हुए सेवाधारी कहो, शिक्षक कहो, उन्हीं पर ही रहती है। सदा स्टेज पर हो। कितनी बड़ी स्टेज है। और कितने देखने वाले हैं।

❷ सभी आप निमित्त आत्माओं से प्राप्ति की भावना रखते हैं। सदा बेहद की अनेक आत्माओं के बीच बड़े ते बड़ी स्टेज पर हो। इसलिए सदा दाता के बच्चे देते रहो और सर्व की भावनायें सर्व की आशायें पूण करते रहो।

❸ महादानी और वरदानी बनो, यही आपका स्वरूप है। इस स्मृति से हर संकल्प, बोल और कर्म हीरो पार्ट के समान हो क्योंकि विश्व की आत्मायें देख रही हैं। सदा स्टेज पर ही रहना, नीचे नहीं आना।

❹ निमित्त सेवाधारियों को बापदादा अपना फ्रेंडस समझते हैं। क्योंकि बाप भी शिक्षक है तो बाप समान निमित्त बनने वाले फ्रेंडस हुए ना। तो इतनी समीप की आत्मायें हो।

❺ जब भी बाबा कहो तो हजार भुजाओं के साथ बाबा आपके साथ है। जो निमित्त बने हुए हैं उन्हीं को बापदादा एकस्ट्रा सहयोग देते हैं। इसीलिए बड़े फखुर से बाबा कहो, बुलाओ, तो हाजिर हो जायेंगे। बापदादा तो ओबीडियन्ट हैं ना।

प्रश्न 5 :- जब बाप समान संकल्प, संस्कार हो जायेंगे तो क्या होगा? समर्थ की निशानी क्या है?

उत्तर 5 :- बापदादा समझानी दे रहे हैं-

❶ जिस समय भी कोई कमज़ोरी वर्णन करते हो, चाहे संकल्प की, बोल की, चाहे संस्कार स्वभाव की, तो शब्द क्या कहते हो? मेरा विचार ऐसा कहता है। वा मेरा संस्कार ही ऐसा है। लेकिन जो बाप का संस्कार, संकल्प सो मेरा संस्कार, संकल्प।

❷ जब बाप जैसा संकल्प, संस्कार हो जाता है तो ऐसे बोल कभी नहीं बोलेंगे कि क्या करूँ, मेरा स्वभाव संस्कार ऐसा है। क्या करूँ, यह शब्द ही कमज़ोरी का है।

❸ समर्थ की निशानी है - सदा बाप समान संकल्प, बोल, कर्म, स्वभाव, संस्कार हो। बाप के अलग, मेरे अलग यह हो नहीं सकता। उनके संकल्प में, बोल में, हर बात में बाबा, बाबा शब्द नैचुरल होगा। और कर्म करते करावनहार करा रहा है - यह अनुभव होगा।

FILL IN THE BLANKS:-

(खज़ानों, ड्रामा, समर्थी, बढ़ेगा, आत्मिक, भाग्य, प्रैक्टिकल, परिवर्तक, माया, स्वरूप)

1 अपने ______ को सदा सामने रखते हुए समर्थ आत्मा बन सेवा में ______ लाते रहो। यही बड़ा पुण्य है।

भाग्य / समर्थी

2 माया का मुख्य स्वरूप क्या है, उसको तो अच्छी तरह से जानते हो। लेकिन मायाजीत बनने के बाद वही ______ के स्वरूप कैसे बदल जाते हैं, वह ______ दिखाओ।

माया / ड्रामा

3 माया के भी भिन्न-भिन्न ______ दिखाते हो ना। हर बात का ______ हो, इसका ड्रामा दिखाओ।

परिवर्तक / स्वरूप

4 जो स्वयं को प्राप्ति हुई है, वह औरों को भी कराओ। ______ को बाँटने से खज़ाना और ही ______ ।

खज़ानों / बढ़ेगा

5 जैसे शारीरिक दृष्टि जिसको काम कहते, तो उसके बजाए ______ स्नेह रूप में बदल जाता - ऐसे सब विकार परिवर्तक रूप में हो जाते। तो क्या परिवर्तन हुआ यह ______ में अनुभव भी करो और दिखाओ भी।

आत्मिक / प्रैक्टिकल

सही गलत वाक्यों को चिन्हित करे:- 【✔】 【✖】

1 :- जब एक दिलाराम को दिल दे दी तो उसके सिवाए और कोई आ नहीं सकता। 【✔】

2 :- दिलाराम को दिल देना अर्थात् दिमाग में बसाना। इसी को ही सहज योग कहा जाता है। 【✖】

दिलाराम को दिल देना अर्थात् दिल में बसाना। इसी को ही सहज योग कहा जाता है।

3:- लण्डन निवासी बाबा, बाबा कहते, स्मृति में रखते सदाकाल के लिए मायाजीत हो गये हैं। जब वर्सा सदाकाल का लेते हो तो माया भी सदाकाल की चाहिए ना। 【✖】

लण्डन निवासी बाबा, बाबा कहते, स्मृति में रखते सदाकाल के लिए मायाजीत हो गये हैं। जब वर्सा सदाकाल का लेते हो तो याद भी सदाकाल की चाहिए ना। मायाजीत भी सदाकाल के लिए चाहिए।

4 :- लण्डन है सेवा का फाउन्डेशन स्थान। तो फाउण्डेशन के स्थान पर रहने वाले भी फाउन्डेशन के समान सदा मजबूत हैं। क्या करें, कैसे करें, ऐसी कोई भी कम्पलेन्ट तो नहीं। 【✔】

5 :- जब सब में बाबा आ गया तो बाप के आगे माया आ नहीं सकती। या बाप होगा या माया। 【✔】